हिन्दी परिसंक्षेपण (02)

For Official Use only
केवल कार्यालय कार्य के लिए

Total Marks	*Marks Obtained*
100	
Total	
Total Marks (in words) :	

Signature of the Examiner

Signature of the Head Examiner

Signature of the Centre Superintendent

302801

For Official Use only
केवल कार्यालय कार्य के लिए

QUESTION-ANSWER BOOKLET
प्रश्न-उत्तर पुस्तिका

SAMPLE ASSISTANT-2011

हिन्दी परिसंक्षेपण (02)

Time Allowed : 1 hour **Full Marks : 100**
निर्धारित समय : 1 घण्टा **पूर्णांक : 100**

Roll No. क्रमांक | | | | | | | | | |

Roll No. (in words) .....
क्रमांक (शब्दों में)

Signature of the Candidate .....
अभ्यर्थी के हस्ताक्षर

Signature of the Invigilator .....
निरीक्षक के हस्ताक्षर

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

1. Please check all the pages of the Question-Answer Booklet carefully. In case of any defect, please ask the Invigilator for replacement of the Booklet.
2. You must not tear off or remove any sheet from this Booklet. This Booklet must be handed over to the Invigilator before you leave the Examination Hall.
3. Limit your answer to the space provided in this Booklet. Some extra sheets are given at the end of this Booklet for answering, if required. No additional sheet will be provided.
4. Use of Calculator/Palmtop/Laptop/Other Digital Instruments/Mobile/Cell Phone/Pager is **NOT** allowed.
5. Candidates found guilty of misconduct/using unfair means in the Examination Hall will be liable for appropriate penal/legal action.

अभ्यर्थियों के लिए अनुदेश

1. इस प्रश्न-उत्तर पुस्तिका के सभी पृष्ठों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करें। यदि कोई दोष है, तो निरीक्षक को उसे बदलने के लिए कहें।
2. इस पुस्तिका से कोई पन्ना फाड़ना या अलग करना मना है। परीक्षा-भवन छोड़ने से पहले यह पुस्तिका निरीक्षक के हवाले कर दें।
3. अपने उत्तर को इस पुस्तिका में दिए गए निर्दिष्ट स्थान तक ही सीमित रखें। यदि आवश्यक हो, तो उत्तर देने के लिए प्रत्येक पुस्तिका के अन्त में कुछ अतिरिक्त पृष्ठ दिए गए हैं। कोई अतिरिक्त पृष्ठ नहीं दिया जाएगा।
4. कैलकुलेटर / पामटॉप / लैपटॉप / अन्य डिजिटल उपकरण / मोबाइल / सेल फोन / पेजर का उपयोग वर्जित है।
5. परीक्षा-भवन में अनुचित व्यवहार एवं कार्य के लिए दोषी पाए गए अभ्यर्थी युक्तिसंगत दण्डनीय/वैधानिक कार्रवाई के पात्र होंगे।

SEAL

DO NOT WRITE ANYTHING ON THIS PAGE

इस पृष्ठ पर कुछ न लिखें

हिन्दी परिसंक्षेपण

सभी प्रश्नों के मान बराबर हैं

परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें

निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **तीन** का परिसंक्षेपण करें :

1. यदि मुझे ईश्वर का ज्ञान नहीं है, तो क्या चिन्ता! जब तक मैं हथौड़ा ठीक-ठाक चला लेता हूँ और रूपहीन लोहे को तलवार के रूप में गढ़ देता हूँ तब तक यदि मुझको ईश्वर का ज्ञान नहीं है, तो न सही। उस ज्ञान से मुझको प्रयोजन ही क्या? जब तक मैं अपना उद्धार ठीक और शुद्ध रीति से किए जाता हूँ तब तक मुझे आध्यात्मिक पवित्रता का ज्ञान नहीं होता, तो होने दो। उससे सिद्धि ही क्या हो सकती है! निष्ठापूर्वक अपना कर्म किए जाना भी तो ईश्वराधन ही है। मैं अपना कर्म करता हूँ, फल की चिन्ता नहीं करता। इस निष्काम कर्म का अपना सुख है। मैंने तो इसे ही ईश्वर जाना है। इतना मैंने और जाना है कि मनुष्य-मात्र से प्रेम करना, जीव-मात्र के प्रति सेवाभावी होना और करुणा से भर जाना भी ईश्वर को ही जानना है। मन्दिर-मस्जिद-गिरजा-गुरुद्वारा वाले ईश्वर का ज्ञान अभी मुझको नहीं है।

2. युवा वर्ग का मस्तिष्क नई-नई बातों की ओर ज्यादा तेज दौड़ता है। उसमें अन्य वर्ग के व्यक्तियों से अधिक आवेश और शक्ति होती है। इस अवस्था में यदि सही शिक्षा और उचित मार्गदर्शन न मिले, तो यही शक्ति और प्रेरणा निर्माण के स्थान पर विनाश की ओर ले जाती है। बिगड़ने और बचने की भी यही आयु होती है। दुर्भाग्य से हमारे देश में शिक्षा-पद्धति केवल उपाधि बाँटने का काम करती है। एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व वाला मनुष्य बनाना आज की शिक्षा-पद्धति के लिए कठिन है। हमारी शिक्षा-पद्धति हमें कमाऊ पूत बनाना चाहती है, हम सुसंस्कार-सम्पन्न बेहतर मनुष्य बनें, ऐसा वातावरण आज के शिक्षण-संस्थानों में नहीं है, न उनकी सोच ही वैसी है। शिक्षा को तो आँख कहा गया है, आँख जो सत्य को पहचान सके।

3. गुरु से ज्ञान प्राप्त करने के केवल तीन उपाय हैं—नम्रता, जिज्ञासा और सेवा। इनमें नम्रता का स्थान प्रथम है। अतः एक आदर्श विद्यार्थी को विनम्र होना चाहिए। जो विद्यार्थी अनुशासनहीन होते हैं, वे अपने देश, अपनी जाति, अपने माता-पिता, अपने गुरुजन और अपने शिक्षण-संस्थानों के लिए अप्रतिष्ठाकारक होते हैं। अनुशासनहीन छात्र का न तो मानसिक विकास होता है, न बौद्धिक। वह उन गुणों से सदा के लिए वंचित हो जाता है, जो मनुष्य को प्रतिष्ठा के पद पर आसीन करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन का विशेष महत्त्व है। अनुशासित विद्यार्थी ही आदर्श विद्यार्थी की श्रेणी में आ सकता है। आज के छात्र अनुशासनहीनता दिखाने में अपना गौरव समझते हैं, इसलिए देश में सभ्य नागरिकों का अभाव-सा होता जा रहा है, क्योंकि आज के छात्र ही भविष्य के नागरिक बनेंगे। अनुशासन एक प्रकार का आत्मानुशासन है। विद्यार्थियों को मर्यादा की रक्षा के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए।

4. दुःख और असन्तोष का कारण मात्र निर्धनता ही नहीं है। मनुष्य एक बहुत ही विचित्र प्राणी है। वह अन्य समस्त जीवधारियों से मौलिक रूप से भिन्न है। उसको विकास की अनन्त सम्भावनाएँ, अदम्य आशाएँ, रचनात्मक शक्तियाँ तथा आध्यात्मिक शक्तियाँ प्राप्त हैं। उसको सुख-सुविधाओं के वे समस्त साधन प्राप्त हैं, जो सम्पत्ति प्रदान कर सकते हैं, परन्तु यदि उसकी रचनात्मक और आध्यात्मिक शक्तियाँ अविकसित एवं अतृप्त रह जाती हैं, तो वह जीवन को जीने के योग्य कदापि नहीं समझ पाएगा। बर्नार्ड शॉ, एच० जी० वेल्स तथा मैथ्यू आर्नल्ड जैसे महान लेखकों ने आधुनिक जीवन की दुर्बलताओं, असफलताओं एवं विसंगतियों का खुलकर वर्णन किया है और इसी कारण वे भविष्यद्रष्टा लेखक भी कहे जाते हैं, परन्तु उन्होंने मानव-मन की गहराइयों की उपेक्षा कर दी है। उन्होंने जिन बातों का विरोध किया है, उनके स्थान पर अपनी ओर से विकल्प प्रस्तुत नहीं किए हैं और इस प्रकार प्राचीन परम्पराओं, नैतिक मान्यताओं, धार्मिकता की रिक्तता के स्थान पर संशय और संदेह से युक्त भावनाओं को स्थान दे दिया है।

5. अपने-आप को हर घड़ी और हर पल सेवा में लगा देने का नाम ही परोपकार है। सच्चा परोपकारी अपने किए उपकारों को याद नहीं रखता। परोपकार करना उसका स्वभाव बन जाता है। वृक्ष तो भूमि से रस-ग्रहण में ही लगा रहता है। उसे यह ध्यान नहीं होता कि उसमें कितने फूल और फल लगेंगे तथा कब लगेंगे। उसका काम तो अन्दर-ही-अन्दर बढ़ना, बिना कुछ हानि-लाभ का अनुभव किए सबको छाया देना, फल देना और तृप्ति देना है। उसे इस चिन्ता से क्या मतलब कि कौन उसका फल खाएगा और कितने फल उसने लोगों को दिए। यही बात सच्चे परोपकारियों के साथ है। ऐसे व्यक्तियों के निर्माण के लिए कारखाने कायम नहीं हो सकते। वे जीवन-अरण्य में खुद-ब-खुद पैदा होते हैं। दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर वे खड़े हो जाते हैं। अपनी सीधी-सादी जीवन-शैली का वे दिखावा नहीं करते। उनकी ज़िन्दगी मुश्किल से कभी-कभी बाहर नज़र आती है। उनका स्वभाव तो आत्म-गोपन का है।

6. संस्कृति का निर्माण कुछ दिनों अथवा कुछ महीनों में नहीं हो सकता। संस्कृति हजारों-लाखों वर्षों की विकास-यात्रा का परिणाम होती है। असंख्य युगों की साधना के पश्चात् मानव-समाज ने साहित्य, संगीत, नृत्य एवं मूर्तिकला आदि के क्षेत्रों में जो प्रगति की है, अध्यात्म, दर्शन तथा ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जो प्रगति की है, उसका सम्बन्ध हमारी संस्कृति से जुड़ा हुआ है। आदिकाल से हमारे लिए जो लोग काव्य और दर्शन रचते आए हैं, वे हमारी संस्कृति के रचयिता हैं। आदिकाल से हम जिस-जिस रूप में शासन चलाते आए हैं, पूजा करते आए हैं, मन्दिर और मकान बनाते आए हैं, नाटक और अभिनय करते आए हैं, कपड़े और ज़ेवर पहनते आए हैं, शादी और श्राद्ध करते आए हैं, पर्व और त्योहार मनाते आए हैं अथवा परिवार, पड़ोसी और संसार से दोस्ती या दुश्मनी का जो भी सलूक करते आए हैं, वे सब-के-सब हमारी संस्कृति के ही अंश हैं।